# शब्द

## शब्द- 'श'-शरीर, 'ट'-व्यंजन, 'द'-दम,दया,दर्द।

अशोक 'मानव'

अर्थात शरीर के व्यंजन का दम, दया, दर्द। शरीर में जाने वाले व्यंजन से तैयार होने वाली ऊर्जा जो शब्दों में दम बढ़ाने, दया पैदा करने और दर्द बढ़ाने की क्रिया है। प्राकृतिक अर्थों में शरीर में बनने वाली ऊर्जा (प्रवृत्ति) का विकास करके शब्दों में व्यक्त होती है। वैज्ञानिक परिभाषा में जीव के क्रमिक विकास से पैदा होने वाला भाव शब्दों में प्रस्फुटित होता है। सामाजिक अर्थों में शब्द अपनी इच्छा को दूसरों तक पहुँचाने की क्रिया है। शब्द प्रवृत्ति की वह गंध है जो स्वतः व्यक्त हो जाती है। शरीर द्वारा खाये गये पदार्थ से बनने वाली प्रवृत्ति के अनुसार गंध का निर्माण करती है जो शब्दों में व्यक्त होती है। यह ऊर्जा सभी जीव बनाते है। जो अपनी भाषा में व्यक्त करते है। जो जीव शब्द में नहीं व्यक्त कर पाते है वे गंध के रूप में अपनी प्रवृत्ति की ऊर्जा फैलाते है। मानव अपनी प्रवृत्ति की ऊर्जा अनेकों भाषाओं, शब्द रूप में व्यक्त करता है। जो भाषा मानव नहीं जानता है उसका प्रभाव कम पड़ता है, पर भाव की गंध प्रभावित करती है। जो भाषा मानव जानता है उसका गहरा प्रभाव पड़ता है। मानव जिस शब्द का अर्थ जानता है उसे स्वीकार कर लेता है। जिस कारण शब्द का गंध रूप उसके शरीर में श्वसन क्रिया के माध्यम से पहुँच जाता है। जो शरीर के अन्दर रासायनिक क्रिया करने लगता है। उसी से सम्बन्धित विचार बनने लगते है जो उसकी प्रवृत्ति को प्रभावित करके उसी गुण को बनाने लगते है। यदि भाषा व्यक्ति न जान रहा हो तो, शब्द का अर्थ नहीं पता होता है तो व्यक्ति उसे स्वीकार नहीं करता है। जो हवा होने के कारण हवा में उड़ जाता है।

शब्द मानव जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। इसी से मानव जीवन प्रभावित होकर अपना बनाता है। शब्द ही मानव के जीवन में 'दम' बढ़ाते है। शब्द से मानव के अंदर 'दया' पैदा होती है और शब्द से ही मानव जीवन के अंदर 'दर्द' पैदा होता है। शब्द ही हारे हुए के जीने का सहारा बन जाते है। शब्द से ही व्यक्ति निराशापूर्ण जीवन जीने लगता है। शब्द मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। शब्द के बाण मानव जीवन में अपने प्रभाव छोड़ देते है। जो मानव जीवन के शरीर में रासायनिक क्रिया के माध्यम से प्रभावित करने लगते है। जिसके प्रभाव से व्यक्ति का बदलाव हो जाता है। अच्छे शब्द जीवन को सही दिशा में ले जाते है जो उत्साह बढ़ाकर जीवन को सुगन्धित कर देते है। यह सुगन्ध प्रकृति में निकल कर खुशियाँ फैलाने लगती है जो श्वसन क्रिया के माध्यम से दूसरों के अन्दर भी जाती है। जिसके शब्द होते है उसके अन्दर भी यह सुगन्ध पहुँचती है। इसलिए उत्साह बढ़ाने वाले शब्द को ही व्यक्त करना चाहिए। निराशाजनक शब्द दुःख बढ़ाने का काम करते है। जो व्यक्ति को कमजोर करने की क्रिया करते है। आपसी संबंधों में ज्यादातर इस तरह की बाते देखने को मिलती है। जो ऐसे शब्द व्यक्त करते है उनके ऊपर भी इसका प्रभाव पड़ता है। ऐसा करने से समाज में निराशाजनक प्रदूषण फैलता है। जो दर्द और बीमारी का कारण बनता है। पर जैसी जिसकी प्रवृत्ति होगी उसे शब्दों में ही व्यक्त करेगा। चालाकी पूर्ण शब्द मानव में ही पाया जाता है। अन्य जीव अपनी प्रवृत्ति को ही व्यक्त करते है। जब तक सुगन्धित समाज की स्थापना नहीं हो पा रही है तब तक मानव को शब्दों के बाण से बचने के लिए इसकी वैज्ञानिकता जानकर इससे बचने की कला का प्रयोग करना चाहिए।

शब्द में एक आकृति होती है जो प्रवृति की गंध की स्याही से रेखांकित होती है। इसका स्वरूप सूक्ष्म होता है जो सामान्य नजर से नहीं बल्कि तीसरी नजर से देखा जा सकता है। जब व्यक्ति बोलता है तो शब्द आकृति बनाकर निकलता है। जो व्यक्ति इसे ध्यान से सुनता है उसके कान के पर्दे से टकराकर अपनी आकृति के गंध को नशों के माध्यम से शरीर के अन्दर अपने गुण की गंध को फैला देता है। जो शरीर के अन्दर की तंत्र क्रिया में अपने गुणात्मक गंध से रासायनिक क्रिया करके उस गुण के जीवाणु को बनाने लगता है। जिससे प्रभावित होकर व्यक्ति उसी तरह का विचार बनाने लगता है। जिससे उसके अन्दर भावनात्मक परिवर्तन होने लगता है जो उसकी प्रवृत्ति को बदल देता है। पर जब व्यक्ति बात को ध्यान से नहीं सुनता है या उस भाषा के शब्द का अर्थ नहीं जानता है तो उसके ऊपर उसका प्रभाव नहीं पड़ता है। लेकिन जब वह उसका अर्थ जानता है तो प्रभावित होता है। ऐसे समय में जो उत्साह बढ़ाने वाले शब्द या ज्ञानपूर्ण शब्द हो तो उन्हें अपनी इच्छा में स्वीकार करें। अन्यथा इच्छाशक्ति से उसे अस्वीकार कर दिया जाता है। तब शरीर के अन्दर ऐसे जीवाणु बनने लगते है जो उसकी गन्ध को सक्रिय होने से पूर्व गर्म साँसों के माध्यम से गंध को गर्म करके हल्का बना देते है जो गर्म साँस के साथ बाहर निकल जाता है और व्यक्ति उस शब्द से प्रभावित नहीं हो पाता है। शब्द एक प्रभावशाली अभिव्यक्ति है। इसलिए खुद अच्छे शब्द का प्रयोग करें और दूसरे द्वारा बोले गये अच्छे शब्दों को स्वीकार करें। निराशा बढ़ाने वाले या अपशब्द को अस्वीकार करके अपनी इच्छाशक्ति से खण्डित कर दें। ऐसा करने से आप शब्दों की मार से बच सकते है।